

SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)



वैश्विक संकट के दौर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आर्थिक संयम संबंधी अपीलों के प्रभाव का एक अध्ययन: गुरुकुल महिला महाविद्यालय की छात्राओं के संदर्भ में

राजेश कुमार अग्रवाल, पीएच-डी, वाणिज्य संकाय
गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
शोभा अग्रवाल, पीएच-डी, वाणिज्य संकाय
अग्रसेन महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

राजेश कुमार अग्रवाल, पीएच-डी
शोभा अग्रवाल, पीएच-डी
E-mail : smileagrawal15@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/03/2026
Revised on : 19/05/2026
Accepted on : 28/05/2026
Overall Similarity : 00% on 20/05/2026



Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: May 20, 2026 (02:32 PM)
Matches: 0 / 1726 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

वर्तमान समय में विश्व ऊर्जा संकट, महँगाई, वैश्विक आर्थिक अस्थिरता तथा अंतरराष्ट्रीय संघर्षों जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है। इन परिस्थितियों का प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था एवं सामान्य जनजीवन पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नागरिकों से ऊर्जा संरक्षण, सीमित उपभोग, स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग, ईंधन बचत तथा आर्थिक संयम अपनाने की अपील की गई। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इन अपीलों का महाविद्यालयीन छात्राओं पर पड़ने वाले सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना है। यह अध्ययन गुरुकुल महिला महाविद्यालय की छात्राओं के विशेष संदर्भ में किया गया है। शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया तथा 75 छात्राओं से प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़े संकलित किए गए। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा समय-समय पर की गई अपीलों युवा वर्ग के विचारों एवं व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यदि शैक्षणिक संस्थानों एवं सरकार द्वारा संयुक्त रूप से जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जाएँ, तो ऊर्जा संरक्षण एवं आर्थिक संयम की भावना को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द

ऊर्जा संरक्षण, सीमित उपभोग, स्वदेशी भावना, आर्थिक संयम, वैश्विक संकट.

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ऊर्जा संकट, महँगाई, आपूर्ति श्रृंखला में बाधा तथा अंतरराष्ट्रीय संघर्षों ने विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। विशेष रूप से पश्चिम एशिया में तनाव एवं ईंधन मूल्यों में वृद्धि ने भारत जैसे विकासशील देशों के समक्ष आर्थिक चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। ऐसी परिस्थिति में

भारत के प्रधानमंत्री छतमदकतं डवकप ने नागरिकों से ऊर्जा संरक्षण, सीमित उपभोग, स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग, पेट्रोल-डीजल की बचत, सार्वजनिक परिवहन के उपयोग तथा अनावश्यक खर्चों में कमी लाने की अपील की।

प्रधानमंत्री द्वारा 'वर्क फ्रॉम होम', कार पूलिंग, ऑनलाइन बैठकों तथा स्वदेशी उत्पादों को अपनाने जैसे सुझावों को राष्ट्रीय उत्तरदायित्व एवं आर्थिक संयम से जोड़ा गया।

युवा वर्ग, विशेषकर महाविद्यालयीन छात्राएँ, सामाजिक परिवर्तन एवं जनजागरूकता की महत्वपूर्ण वाहक मानी जाती हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन में गुरुकुल महिला महाविद्यालय की छात्राओं के मध्य प्रधानमंत्री की अपीलों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की सीमाएँ

1. अध्ययन केवल गुरुकुल महिला महाविद्यालय की छात्राओं तक सीमित है।
2. अध्ययन हेतु केवल 75 उत्तरदाताओं का चयन किया गया।
3. शोध मुख्यतः प्रश्नावली आधारित प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है।
4. उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत विचारों में भिन्नता संभव है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्राओं में ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. सीमित उपभोग एवं अनावश्यक खर्चों में कमी की प्रवृत्ति का विश्लेषण करना।
3. स्वदेशी उत्पादों के प्रति छात्राओं की सोच का अध्ययन करना।
4. प्रधानमंत्री की अपीलों के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
5. छात्राओं के व्यवहार में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. प्रधानमंत्री की अपीलों से छात्राओं में ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ी है।
2. सीमित उपभोग की भावना में सकारात्मक परिवर्तन आया है।
3. छात्राओं में स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की प्रवृत्ति बढ़ी है।
4. आर्थिक संयम संबंधी अपीलों का छात्राओं के दैनिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ा है।

शोध प्रविधि

- शोध का प्रकार: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक।
- अध्ययन क्षेत्र: गुरुकुल महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
- अध्ययन इकाई: महाविद्यालय की छात्राएँ।
- नमूना आकार: 75 छात्राएँ।
- निदर्शन पद्धति: सुविधाजनक निदर्शन।
- डेटा संग्रह: प्रश्नावली एवं साक्षात्कार।
- डेटा का प्रकार: प्राथमिक एवं द्वितीयक।
- विश्लेषण पद्धति: प्रतिशत एवं सारणीकरण।

अध्ययन क्षेत्र

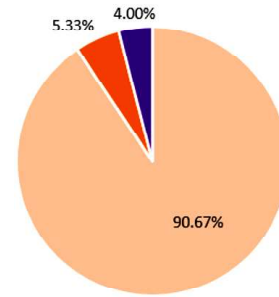
प्रस्तुत अध्ययन गुरुकुल महिला महाविद्यालय की छात्राओं पर आधारित है। अध्ययन हेतु स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की 75 छात्राओं का चयन किया गया। उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई।

प्रश्नावली आधारित आंकड़ों का विश्लेषण

1. क्या आपको प्रधानमंत्री की आर्थिक संयम संबंधी अपीलों की जानकारी है?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	68	90.67%
नहीं	04	5.33%
आंशिक	03	4.00%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)



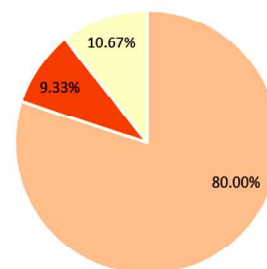
■ हाँ ■ नहीं ■ आंशिक

90.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपीलों की जानकारी है, जबकि केवल 4: उत्तरदाता इससे अनभिज्ञ थे। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी संदेश व्यापक रूप से लोगों तक पहुँचे और युवाओं में राष्ट्रीय विषयों के प्रति अच्छी जागरूकता है।

2. क्या आपने "अनावश्यक सोना खरीदने से बचें" संबंधी अपील सुनी है?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	60	80.00%
नहीं	07	9.33%
आंशिक	08	10.67%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

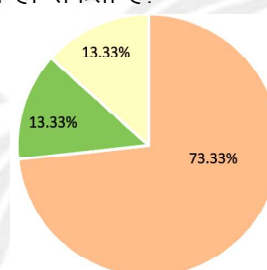


80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इस अपील की जानकारी होने की बात कही, जबकि 10.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने आंशिक जानकारी बताई। इससे यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक संकट के समय विलासिता संबंधी खर्चों में संयम का संदेश समाज पर प्रभाव डाल रहा है।

3. क्या आप मानते हैं कि संकट काल में सोने की खरीद कम करना देशहित में हो सकता है?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	55	73.33%
नहीं	10	13.33%
आंशिक	10	13.33%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

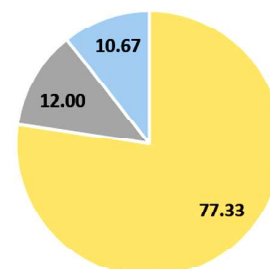


73.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि संकट काल में सोना खरीद कम करना देशहित में हो सकता है। वहीं 13.33 प्रतिशत विद्यार्थियों ने असहमति व्यक्त की। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी आर्थिक संयम को राष्ट्रीय हित से जोड़कर देखते हैं।

4. क्या आपने पेट्रोल/डीजल का उपयोग कम करने का प्रयास किया?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	58	77.33%
नहीं	09	12.00%
आंशिक	08	10.67%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)



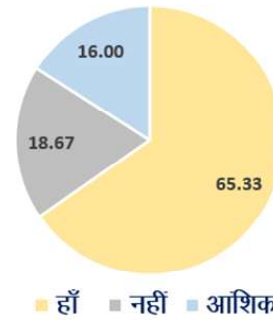
■ हाँ ■ नहीं ■ आंशिक

77.33 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ईंधन उपयोग कम करने का प्रयास किया, जबकि 12 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ऐसा नहीं किया। यह दर्शाता है कि बढ़ती महँगाई एवं ऊर्जा संकट के कारण लोगों में ईंधन संरक्षण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हुई है।

5. क्या आपने छोटी दूरी के लिए पैदल या साइकिल का उपयोग बढ़ाया?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	49	65.33%
नहीं	14	18.67%
आंशिक	12	16.00%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

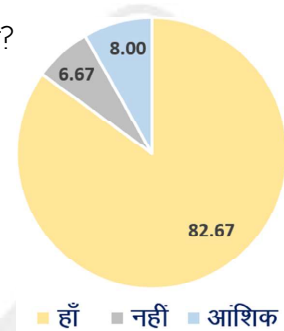


65.33 प्रतिशत विद्यार्थियों ने छोटी दूरी के लिए पैदल या साइकिल उपयोग को अपनाया जबकि 18.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इसे व्यवहार में नहीं अपनाया। इससे पता चलता है कि पर्यावरण एवं ईंधन बचत के प्रति जागरूकता तो बढ़ी है, परंतु व्यवहार परिवर्तन अभी पूर्ण रूप से नहीं हुआ है।

6. क्या आपने "Work From Home" या ऑनलाइन कार्य/अध्ययन को उपयोगी माना?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	62	82.67%
नहीं	05	6.67%
आंशिक	06	8.00%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

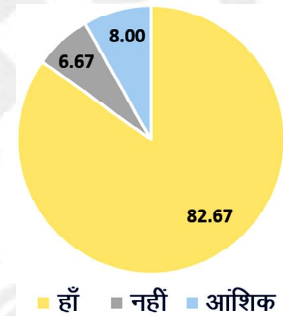


82.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ऑनलाइन कार्य एवं अध्ययन को उपयोगी माना। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यमों ने समय, ईंधन एवं संसाधनों की बचत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

7. क्या आपने विदेश यात्रा या अनावश्यक पर्यटन में कमी को उचित माना?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	57	76.00%
नहीं	08	10.67%
आंशिक	10	13.33%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

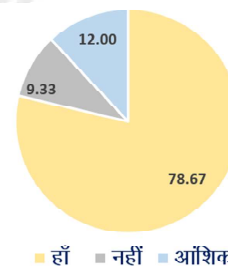


76 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि संकट काल में अनावश्यक यात्राओं में कमी आवश्यक है। यह प्रतिशत आर्थिक संयम एवं संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की मानसिकता को दर्शाता है।

8. क्या आपने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा दिया?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	59	78.67%
नहीं	07	9.33%
आंशिक	09	12.00%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

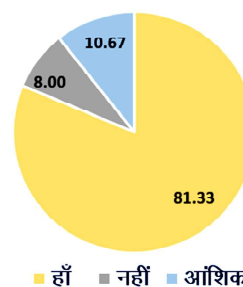


78.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का समर्थन किया। इससे "आत्मनिर्भर भारत" की भावना एवं स्थानीय उत्पादों के प्रति विश्वास में वृद्धि दिखाई देती है।

9. क्या आपने अनावश्यक खर्चों में कमी करने का प्रयास किया?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	61	81.33%
नहीं	06	8.00%
आंशिक	08	10.67%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

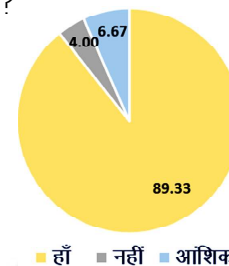


81.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनावश्यक खर्चों में कमी करने का प्रयास किया। यह प्रतिशत दर्शाता है कि आर्थिक संकट ने लोगों को बचत एवं सीमित उपभोग की ओर प्रेरित किया है।

10. क्या आपको लगता है कि सीमित उपभोग से आर्थिक संकट का प्रभाव कम हो सकता है?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	67	89.33%
नहीं	03	4.00%
आंशिक	05	6.67%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

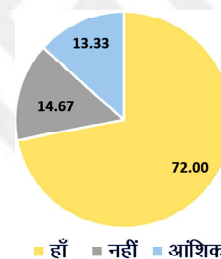


89.33 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि सीमित उपभोग आर्थिक संकट के प्रभाव को कम कर सकता है। इससे सामूहिक जिम्मेदारी एवं सामाजिक सहयोग की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

11. क्या प्रधानमंत्री की अपीलों का आपके व्यक्तिगत व्यवहार पर प्रभाव पड़ा?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	54	72.00%
नहीं	11	14.67%
आंशिक	10	13.33%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

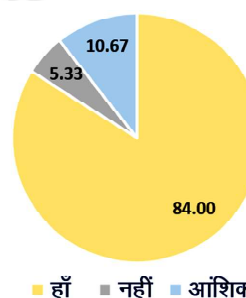


72 प्रतिशत विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि प्रधानमंत्री की अपीलों का उनके व्यक्तिगत व्यवहार पर प्रभाव पड़ा। जबकि 14.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रभाव न होने की बात कही। इससे पता चलता है कि सरकारी अपीलें समाज के व्यवहार को प्रभावित करने में सक्षम रही हैं।

12. क्या युवा वर्ग ऊर्जा संरक्षण के प्रति पहले से अधिक जागरूक हुआ है?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	63	84.00%
नहीं	04	5.33%
आंशिक	08	10.67%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)

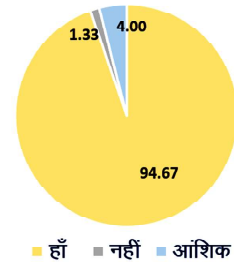


84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि युवाओं में ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ी है। यह प्रतिशत शिक्षा, मीडिया एवं सामाजिक अभियानों की सकारात्मक भूमिका को दर्शाता है।

13. क्या आप मानते हैं कि राष्ट्रीय संकट में नागरिकों को आर्थिक संयम अपनाना चाहिए?

उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हाँ	71	94.67%
नहीं	01	1.33%
आंशिक	03	4.00%
योग	75	100.00%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)



94.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि राष्ट्रीय संकट के समय आर्थिक संयम आवश्यक है। यह अत्यधिक प्रतिशत राष्ट्रहित, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामूहिक सहयोग की मजबूत भावना को प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वैश्विक संकट के समय राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा की गई अपीलें समाज एवं युवा वर्ग को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गुरुकुल महिला महाविद्यालय की छात्राओं में ऊर्जा संरक्षण, सीमित उपभोग एवं स्वदेशी भावना के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है।

छात्राओं ने यह स्वीकार किया कि आर्थिक संयम केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हित से भी जुड़ा हुआ है। अतः सरकार एवं शैक्षणिक संस्थानों को संयुक्त रूप से जागरूकता कार्यक्रम चलाने चाहिए ताकि युवा वर्ग राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सके। "ऊर्जा संरक्षण एवं आर्थिक संयम की भावना केवल व्यक्तिगत अनुशासन नहीं, बल्कि राष्ट्रहित एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।"

सुझाव

1. महाविद्यालयों में ऊर्जा संरक्षण संबंधी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. छात्राओं को स्वदेशी उत्पादों के उपयोग हेतु प्रेरित किया जाए।
3. सार्वजनिक परिवहन एवं डिजिटल माध्यमों को बढ़ावा दिया जाए।
4. सरकार एवं शैक्षणिक संस्थानों द्वारा संयुक्त अभियान चलाए जाएँ।
5. युवा वर्ग में आर्थिक संयम एवं जिम्मेदार उपभोग की भावना विकसित की जाए।

संदर्भ सूची

1. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सार्वजनिक संबोधन एवं समाचार रिपोर्ट, मई 2026।
2. अग्रवाल, आर.के. (2013) भारतीय अर्थव्यवस्था पर आर्थिक सुधारों का प्रभाव. *International Journal of Review and Research in Social Science*, 1(2), 39-40.
3. दत्ता, रुद्र एवं सुन्दरम, के.पी.एम (2022) भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. चॉन्द पब्लिशिंग, नई दिल्ली, पृ. 210-240।
